

मानसिक पराधीनता

लेखक परिचय:- प्रेमचंद जी का जन्म वाराणसी के निकट लमही गाँव में 31 जुलाई 1880 में हुआ था। प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी कहानी के पितामह और सम्राट माने जाते हैं। उनकी पहली हिन्दी कहानी सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। प्रेमचंद ने करीब तीन सौ कहानियाँ, लगभग दस दर्जन उपन्यास और कई लेख लिखे। प्रेमचंद के कई साहित्यिक कृतियों का अनूदित देशी, विदेशी भाषाओं में हुआ। 'गोदान' उनकी कालजयी रचना है। 'कफन' उनकी अंतिम कहानी मानी जाती है। 'कफन' उनकी अंतिम कहानी मानी जाती है। 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया।

प्रस्तावना :- राष्ट्र या जाति का सबसे बहुमूल्य अंग उसकी सभ्यता, उसके विचार, उसका कलचर है। कलचर एक व्यापक शब्द है। हमारे धार्मिक विचार, हमारी सामाजिक रूढ़ियाँ, हमारे राजनैतिक सिद्धान्त, हमारी भाषा और साहित्य, हमारा रहन-सहन, हमारे आचार-व्यावहार, सब हमारे कलचर के अंग हैं। पर आज हम कितनी बेदुर्ती से इसी कलचर को जड़ काट रहे हैं।

पृष्ठ संख्या

अंग्रेजी हमारे सभ्य-समाज की व्यावहारिक भाषा बन गई है :-

कवि कहते हैं की दुपत्तरी में तो हमें अंग्रेजी में कहता ही पड़ता है; पर उस भाषा की सत्ता के हम दोसे थकस हो गये हैं कि निजी चिट्ठियों में, घर की बातचीत में भी उसी भाषा का आश्रय लेते हैं। अंग्रेजी में पत्र लिखते हैं, दो मित्र मिलते हैं, तो अंग्रेजी में वार्तालाप करते हैं, कोई सभा होती है, तो अंग्रेजी में, लायरी अंग्रेजी में लिखी जाता है। यहाँ तक कि हमारी योग्यता और विद्वत्ता की यही दगक परख हो गयी है कि हम अंग्रेजी बोलते या लिखते में कितने कुशल हैं।

अंग्रेजी पठित-सामाजिक भाषा बन गयी है :-

सज्जनों जी बहुत थोड़ी-सी अंग्रेजी जानकर भी अंग्रेजी में ही अपनी योग्यता का प्रदर्शन करते हैं। दगक ही भाषा-भाषियों का अंग्रेजी में बातें करने की प्रेरणा करती है, किसी मद्रासी, बंगाली या चीनी से तो अंग्रेजी में बातें करने का कोई अर्थ हो सकता है, उनसे बातें करती जरूरी है और इस वक़्त और कोई दूसरी भारतीय भाषा नहीं जिसका साथी प्रांतवालों का दगक-सा ह्रान हो; अगर दगक ही प्रांत के रहनेवाले,

जब ही भाषा के बोलने वाले, क्योंकि आपस में अंग्रेजी बोलते हैं, 'प्रणाम' या 'नमस्कार' या 'वंद' या 'नमस्ते' या 'तस्लीम' करने के बदले "मॉनिंग, मॉनिंग" कहते हैं। आज हमारा पठित-समाज आधारा जनता से पृथक् हो गया है।

असका रहन-सहन, उसकी बोल-चाल, उसकी वेष-श्रृंखला, सभी उसे आधारण समाज से अलग कर रहे हैं।

वेष-श्रृंखला :- कवि कहते हैं हट-कट लगाये, गरुर से बूधर-उधर देखते चल जा रहे हैं। यह हमारे हिन्दुस्तानी योरापियन हैं, कवि के अनुसार से पाँव तक गुलाम नज़र आते हैं, जो अपनी गुलामी का उसी बैशर्मी से प्रदर्शन कर रहे हैं। अंग्रेजी-कलब में चला जाय, तो उसके हाथ-पाँव फूल जायेंगे, खून ठण्डा हो जायेंगा, चेहरा फक हो जायेंगा। दूसरी बात कि उसका आत्म-मौख केवल अपने शत्रुओं पर शीब जमाने के लिए है, उसकी सश का नाम नहीं। लेखक कहता है जो स्वार्थ लेकर अंग्रेजी से मिलने नहीं जाते, वह अचकन नहीं, मिर्जिहू थी पहने हों, तो उन्हें जूते उतारने की जरूरत नहीं, वह किसी वेष में हों, उनकी आत्मा दूबी रहती है।